ी बच्चे देही-अभिमानी होकर बैठ हो? हम आत्मीय बाप के सामने बैठे है। बाप का घर और वर्सा
र याद आवेगा। देही-अभिमानी होकर रहेंगे तो वो याद नही आवेगी। अब रूहानी बच्चो को बाप से
ा मिलता है। यह बच्चे ही जानते है कि हम बाप से कल्पकल्पान्तर ही बाप से वर्सा लेते आये है।
 हद का वर्सा भूलता जायेगा। बेहद का वर्सा पक्का होगा। तुम बैठे ही हो बेहद के बाप से वर्सा
। अन्दर मे बहुत खुशी होगी। तुम जानते हो कि हम रूहानी बाप से भविष्य के लिये ऊंच ते ऊंच
ा पा रहे है। खुशी होनी चाहिये। हम अपना ऊंच ते ऊंच पद पा रहे है। अपने को आत्मा समझना है।
ाया भी जाता है आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुतकाल... तुम बच्चे इस रहस्य को समझ गये हो कि हमी
ाबा को मिलते है। हम ही आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे। हिन्दु धर्म तो कोई ने स्थापन किया नही
। हिन्दुस्तान के निवासी हिन्दु कहला लेते है। हिन्दु धर्म तो है नही। अभी तुम तमोप्रधान बन गये हो।
 कहते हो कि हम पहले सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी .... बने। फिर ब्राह्मण वंशीबनते है। तो तुम बच्चो को तो
 बहुत खुशी होनी चाहिये कि -हम किसके सामने बैठे है। यह भी समझते हो कि हम आदी सनातन देवी
वता धर्म के थे। यही है याद की यात्रा। याद बल। बाबा को याद करने पर तुम्हारे विकर्म विनाश होते
ते है। तुम बच्चे ही जानते हो कि हमने ही सोरेविश्व पर राज्य किया था अब फिर करते है। फिर कोई
ौर खण्ड नही होगा। सिर्फ हमारा भारत खण्ड ही होगा। पवित्र ते पवित्र खण्ड! जैसे-2 बाप की महिमा
परमअपार है वैसे ही तुम्हारी भी महिमा अपरमअपार है। भारत क्या बन जाते है। कितने अच्छे-2 नाम देते
। बच्चे जानते है कि हम ऊंच ते ऊंच बाबा पासआये है। ऊंच ते ऊंच भगवान तो ठीक है परन्तु सेकिंड
म्बर मे कौन है उनको नही जानते है। सेकिंड मे है फिर ब्रह्मा, वि, शं। परन्तु उनमे भी बडा कौन है
ाई नही जानते है। देवी देव कह देव कह देते है। और फिर त्रिमूर्ती ब्रह्मा कह देते है। कब ब्रह्मा को
ाढ़ी मूंछ देते है। और फिर विष्णु शंकर की क्लीन सेव दिखाते है। कही फिर तीनो को ही बिना मूंछ
ा दिखाते है। अनेक प्रकार के चित्र बनाये है। अभी तुम समझते हो कि वो सब भक्ति मार्ग की ही
ामग्री कथायें है। तुम बच्चे जानते हो कि हमको बाप पढाता है। बापशिव को ही कहा जाता है।
क्ति मार्ग मे तो ढेर के ढेर नाम रख दिये है। अभीइतुम बच्चे जानते हो कि जो कुछ सतयुग मे होता
 वो फिर त्रेता मे हो नही सकता है। पहले धर्म मे जो होगा वो दूसरे धर्म मे हो नही सकता है।
म्हारी बुधी मे सारा झाड है। मूल वतन से उतरते आते है यह भी कोई नही जानते है। अभी तुम बच्चे जानते
ो कि शास्त्र पढ़ते-2 सीढी उतरते-2 दुर्गति को पा लिया है। आधा कल्प तो सदगति मे रहेफिर रावण राज्य आ
गया। फिर दुर्गति दुर्गति को पाया। यह है ईश्वरीय परिवार। बाप दादा बहन भाई। हम सब भाई-2 है।
र्सा का हक भाई-बहन दोनो को ही है। सब आत्मीय हकदार है दादे का वर्सा पाने की। बाप से अभी
ात्मीय पढ़ती है। आत्मायें ही कर्म करती है शरीर दवारा। हर एक की आत्मा मे 84जन्मों का पार्ट भरा
हुआ है। हम सब इस बेहद के ड्रामा मे पार्टधारी है। आत्मा कितनी छोटी है। आत्मा कहती है कि मेरे
मे 84जन्मो का पार्ट है। नाँ तो वो मिटने वाला है नाँहीमै मिटने वाला हूं। ज्ञान का सागर बाप ही
है। अनायास ही आकर वृध तन मे प्रवेश करता हूं। प्रजापिता एक ही हुआ नाः फिर तो इतने बच्चे कहाँ
से आये। शिव बाबा ब्रह्मा दवारा ऐडाप्ट करते है। शिव बाबा नाँ होता तो ब्रह्मा भी नही होता।
अभी तुमको श्रृंगार रहे है ज्ञान और योग बल से। योग से तुम्हारे विकर्म विनाश होगें और ज्ञान से तुम विकर्म
विकर्माजीत राजा बनेंगे। याद ही से निरोगी भी बनते हो। बाप को सारी दुनियां के बच्चे कितने प्यारे है
तुम्हारा पार्ट ही है बाबा के साथ। तुम बच्चे को तो बाप टीचर गुरु तीनो इंजन मिले है ले जाने लिये।
एक भूले तो दुसरा याद पडे। परन्तु फिर भी माया भुला देती है। भगवान पढाते है। एकदम कापारी